Lokāyata

The Positive Philosophy

Journal of Positive Philosophy (ISSN: 2249-8389)

Vol. VIII, No.01, March, 2018

Special Issue on "Materialism in Indian Philosophy"

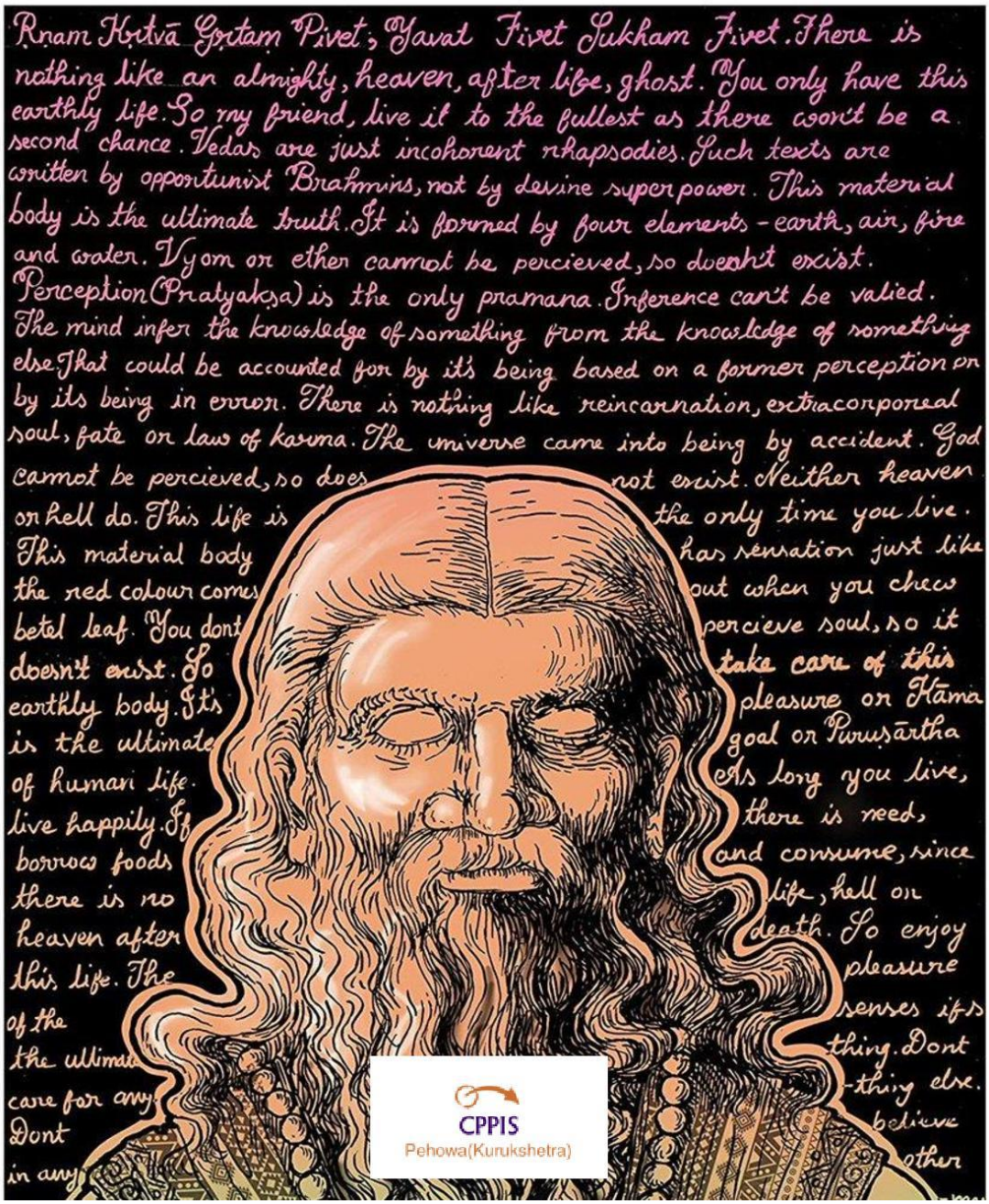

In this issue……

Sr. No.	Title of the Paper & Author	Page No.
1.	Matrilineal Roots in Some Early Materialist Tradition in India: Re-Visiting Tantra from a Marxist Perspective- Archana Barua & Rekhamoni Devi	04
2.	All Philosophical Revolutions is an Offshoot of Materialism in India: A Bried Study based on Evolution of Materialistic Thinking after later Vedic Period- Ferosh.M.Basheer	15
3.	An Appraisal to Indian Materialism: Special Reference to *Cārvāka* Philosophy- Leena. K.R.	19
4.	Rudiments of Materialism Prior to Classical Indian Materialism- Rajen Lakra	26
5.	*Cārvāka* or *Lokāyata* Philosophy as a theory of Materialism- Sayantani Mukherjee & Gargi Goswami	34
6.	Dialectical Materialism- Shikha Kumari	43
7.	Relevance of Substance Theory of Charvaka in Present Times – Desh Raj Sirswal	52
8.	REPORT OF THE PROGRAMME	56
9.	CONTRIBUTORS OF THIS ISSUE	58

चार्वाकदर्शन के तत्व-सिद्धांत की वर्तमान प्रासंगिकता

(Relevance of Substance Theory of Charvaka in Present Times)

देशराज सिरसवाल

भारतीय चिन्तन परम्परा में पंच-महाभूत का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है. भारतीय प्राचीन ग्रन्थों से लेकर अब तक विश्व की सरंचना सम्बन्धी सिद्धांतों में पंच-महाभूत सबसे स्वीकार्य सिद्धांत माना जाता रहा है. ये पांच तत्व हैं: पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश. परन्तु चार्वाक जैसे दार्शनिक और आर्यभट्ट (पांचवीं शताब्दी) जैसे विज्ञानी यह कहते आ रहे हैं की तत्व पांच नहीं, चार हैं. इन लोगों ने आकाश को स्वतंत्र तत्व के रूप में स्वीकर नहीं किया. चार्वाक का यह भी विचार रहा है की सारा भौतिक व प्राकृतिक परिदृश्य न किसी ने रचा है, न इसका कोई उद्देश्य है, प्रकृति में परिवर्तन, विकास, रुपान्तरण आदि इसकी अपनी प्रक्रिया है जो तब भी लाखों करोड़ों वर्षों से हो रहा था और आज भी विभिन्न रूपों में हो रहा है. अत: इस शोध-पत्र का मुख्य विष्ण पंच-महाभूतों की अवधारणा की चार्वाक के सन्दर्भ में समीक्षा करना है और चार्वाक दर्शन की आज की प्रासंगिकता को देखना है.

बुनियादी अंतर

पंच-तत्व के सिद्धांत को मानने वालों का विचार है की इन पांच तत्वों से जब शारीर बनता है तब आत्मा बाहर से प्रविष्ट होती है जबकि चार तत्व को मानने वाले चार्वाक का कथन है की इन चरों तत्वों के विशेष रूप में परस्पर मेल से ही चैतन्य (चेतना) की उत्पत्ति होती है, आत्मा कहीं बाहर से नहीं आती- भूतेभ्य: चैतन्यम.

चार्वाक के इस कथन को सिद्ध करने के लिए लोगों ने अनेक प्रयोगों द्वारा तथ्य इकट्ठे करने का प्रयास किया है. जैसे बौद्ध साहित्य से पता चलता है की पायसी (प्रदेशी) नामक राजपुरुष ने अनेक प्रयोग किये और पाया की मृत्यु के समय कोई चीज़ शरीर से निकल कर कहीं नहीं जाती. चार्वाक कहते हैं - नात्मा पारलौकिक:

काफी प्रयोगों के बाद पायसी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं की शरीर में कोई आत्मा बहर से प्रवेश नहीं करती, बल्कि उन्हीं चीजों के मेल से उत्पन्न होती हैं जिनसे शरीर बना है. आज हम जानते हैं की शरीर केवल इन चार तत्वों की देन नहीं है , आज विज्ञानं बहुत आगे बढ़ गया है और चार्वाक उसके अनुसार नये तत्वों की बात करते हैं. वास्तविकता तो यह है की जिन्हें हम तत्व कह रहे हैं वे तत्व न होकर यौगिक या मिश्रण हैं. तत्व वह होता है जिसमें एक तरह के परमाणु रहते हैं और जिसे सरलतम पदार्थ के रूप में विभाजित नहीं किया जा सकता.

पांच-तत्वों का विश्लेष्ण:

उपरोक्त कथन की ये पांच तत्व न होकर मिश्रण या यौगिक हैं हमें निम्लिखित वैज्ञानिक तथ्यों को भी समझना होगा:

1. पृथ्वी: पृथ्वी 100 से ज्यादा तत्वों का मिश्रण है जिनमे ये आठ प्रमुख हैं : आक्सीजन-46.5%, सिलिकन-27.72%, एल्युमीनियम- 8.13%, लोहा-5.01%, कैल्सियम-3.63%, सोडियम-2.85%, पोटेशियम-2.62%, मैगनिशियम-2.09% तथा अन्य तत्व 1.41%.

2. जल: यह भी यौगिक ही है और हाइड्रोजन और आक्सीजन से बना है . यह तरल रुप्प में भी होता है, ठोस में भी और भाप रूप में भी.

3. वायु: वायु कई गैसों का मिश्रण है जिसमे नाइट्रोजन 79% और 20.96% आक्सीजन का मिश्रण, थोड़ी बहुत कार्बनडाइआक्साइड तथा कुछ जलवाष्प रहते हैं जिनका प्रतिशत बदलता रहता है.

4. अग्नि: ज्वलन एक प्रकिया है, एक घटना जो घटित हो रही है जिसमें पदार्थ हवा में मिलने वाली आक्सीजन से रासायनिक तौर पर मिलते हैं और प्रकाश तथा ताप (गर्मी) छोड़ते हैं, यह स्पष्ट है. इसलिय प्रो. यशपाल कहते हैं की अग्नि कोई चीज़ (थिंग) नहीं है यह एक घटना (हप्पेनिंग) है .

5. आकाश: चार्वाक और आर्यभट्ट जैसे विज्ञानी इसे सदियों पहले नकार चुके हैं फिर 'इथर' नामक द्रव्य की कल्पना की गयी जिसे मिकेल्सन और मारली नामक वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोगों द्वारा पूरी तरह कपोलकल्पित सिद्ध किया है. आकाश का ढांचा उसमे मौजूद द्रव्यमान से निर्धारिक होता है जैसे न्यूटन ने माना है. यदि यह वस्तुएं गायब हो जाएँ तो न कहीं आकाश का पता लगेगा न कल का. साथ ही जो आकाश स्वयम दूसरी वस्तुओं के आस्तित्व पर आश्रित है वह वस्तुओं को बनानी वाली सामग्री किस तरह हो सकती है .

   इस लिए हम कह सकते हैं की ये पंच-तत्व की अवधारणा बौद्धिक और वैज्ञानिक विश्लेष्ण के अनुरूप नहीं हैं आज विज्ञान 118 से उपर तत्वों को खोज निकला है और व्ही शरीर और विश्व के निर्माण के लिए उतरदायी है.

जीवन का सार-तत्व: प्रोटोप्लाज्म

हमारा शरीर कोशिकाओं से बना है. हर कोशिका के अंदर कोशिका-द्रव्य या 'जीव-द्रव्य' होता है जिसे प्रोटोप्लाज्म कहा जाता है इसे पदार्थद्वारा भोजन और आक्सीजन प्राप्त की जाती है. प्रोटोप्लाज्म में राइबोसोम, गोल्गीबाडीज आदि भी होते हैं जो शरीर की विभिन्न क्रियाओं को पूरा करते है. आधुनिक विज्ञान का विश्लेष्ण कर के पाया है कि इसमें 55 भाग कार्बन, 14 भाग नाइट्रोजन, 7 भाग हाइड्रोजन और 1 भाग गंधक, पोटेशियम, सोडियम आदि हैं: 55+23+14+7+1=100.

यही जीव द्रव्य है , जीवन है . अब वैज्ञानिकों ने कृत्रिम जीवन का निर्माण भी कर लिया. 2010 में अमेरिका के जीनोम क्रेग वेंटर की टीम ने रसायनों को जीवित कोशिकाओं के रूप में परिवर्तित करके कृत्रिम जीवन पैदा कर दिया है. ये कृत्रिम क्रोमोसोम रसायनों के रासायनिक ससंश्लेष्ण से बनाये गये थे. पर धार्मिक लोग इसे 'कुदरत के साथ

खिलवाड़' बता कर अपनी झेप मिटा रहे हैं. अत: हम कह सकते हैं की पंच-तत्वों का सिद्धांत आज के विज्ञानिक विश्लेष्ण में सही नहीं बैठता.

चार्वाक की प्रासंगिकता

चार्वाक प्रकृति के जड़ रूप से ही, भौतिक तत्वों से चैतन्य की उत्पत्ति को मानता है. जैसे किनव, मधु और शर्करा आदि के मिलने से मादकता उत्पन्न होती है उसी प्रकार शरीर में चैतन्य की उत्त्पति होती है. जब भौतिक तत्वों का तालमेल बिगड़ जाता है तो चैतन्य भी खत्म हो जाता है- सदा के लिए, सर्वदा के लिए - भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत:.चार्वाक का कहना है की चैतन्य आत्मा का आकस्मिक गुण नहीं बल्कि मौलिक गुण है और चैतन्ययुक्त शरीर ही आत्मा है . यद्यपि आज चार्वाक के चार तत्व भी आदर्शवादियों के पांच तत्वों की तरह ही रद्द हो चुके हैं तथापि उनकी स्थिति दूसरी है. उन्होंने चार तत्वों को प्रकृति के प्रतिनिधि कह कर इन से चेतना की उत्पत्ति मानी है, प्रकृति एकतत्ववाद का उनका सिद्धांत आज विज्ञानसम्मत सिद्धांत है, भले ही उन की तत्वों की बात तकनीकी रूप में सही न हो. उनके लिए चार तत्वों को मानना न अनिवार्य है और न ही उसे मानने के लिए कोई ईश्वरीय आदेश है क्योंकि तत्व उनके लिए प्रकृति के प्रतिनिधि मात्र हैं, जो तब यदि चार थे तो आज 118 हैं. इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता जबकि अन्य दर्शनों के लिए के लिए स्वीकार करना दुरूह है. अत: हम कह सकते हैं की चार्वाक का दर्शन अनात्मवादी, प्रत्यक्षवादी और भौतिकवादी है.

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात', चार्वाक दर्शन, विश्व बुक्स,नई दिल्ली, 2015.
2. बिजयानान्दा कार, द फिलोसोफी ऑफ़ लोकायता, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2013.
3. बिजयानान्दा कार, एथिक्स इन इंडियन मटेरिय्लिस्ट फिलोसोफी, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी, शिमला,2013.
4. नरेश प्रसाद तिवारी , चार्वाक का नैतिक दर्शन, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2010.